SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

सावित्रीबाई फुले : प्रथम भारतीय शिक्षिका

[1]प्रतिभा वर्मा और [2]डॉ0 ओम प्रकाश यादव

[1]शोधार्थिनी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री एल0 बी0 एस0 पी0 जी0 कॉलेज, गोण्डा
[2]शोध निर्देशक, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री एल0 बी0 एस0 पी0 जी0 कॉलेज, गोण्डा

सारांश:

ज्ञानज्योति सावित्रीबाई फुले जी ने समाज के पिछड़े दलित वर्ग के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले जी स्त्री शिक्षा के विकास के सम्बन्ध में क्रांतिकारी विचार रखती थीं। उन्होंने पुरुष-शिक्षा की अपेक्षा स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया। उन्होंने बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए अपने पति ज्योतिबा फुले जी के साथ देश की प्रथम कन्या पाठशाला खोली। शूद्र-अतिशूद्रों को शिक्षा दिलाने के लिए उन्होंने कई पाठशालाओं की स्थापना करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सावित्रीबाई फुले जी ने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए स्त्रियों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया। जिसके परिणामस्वरुप अतीत काल से परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी स्त्री स्वतंत्र हो सकी। माँ सावित्रीबाई फुले जी ने समाज के पिछड़े, दलित और स्त्रियों को शिक्षित करके उन्हें विकास की एक नई दिशा प्रदान की। अपने इन्हीं गुणों के कारण ये प्रथम शिक्षित स्त्री, प्रथम अध्यापिका, शिक्षा की स्फूर्तिनायिका के रूप में जानी जाती हैं।

कुंजी शब्द- सावित्रीबाई फुले, प्रथम शिक्षिका, स्वदेशी पुस्तकालय, सामाजिक वर्जनाएँ, आदर्श पत्नी, शिक्षाविद् जननेता।

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा ही एकमात्र ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जन्मजात शक्तियों को विकसित करके अपने व्यवहार तथा विचारों में निरंतर परिवर्तन, परिमार्जन एवं परिवर्द्धन कर सकता है। शिक्षा के द्वारा ही वह अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को समझकर उसे सुरक्षित रखने एवं विकसित करने में समर्थ हो सकता है। जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा जीवन की सभ्यता की कुंजी है अतः शिक्षाविद् जननेता तथा अनेक समाज सुधारकों ने राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा को प्रारंभ से ही अनिवार्य रूप से आवश्यक माना है। समय निरन्तर परिवर्तनशील है समय-समय पर अनेक युग पुरुषों ने इस धरा पर जन्म लिया है जैसा कि श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तादात्मनं सृजाम्यहम् ।।[1]

'जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ।'

अपने इस कथन को सार्थक करते हुए ईश्वर ने अपने विभिन्न अवतारों के द्वारा सदैव सृष्टि की रक्षा की है। वह चाहे राम, कृष्ण, ईसामसीह, भगवान बुद्ध या भगवान महावीर स्वामी के रूप में क्यों ना हों। जिन-जिन समाज सुधारकों ने मानव कल्याण के लिए सद्कर्म किए या जिन महापुरुषों ने मानव कल्याण के लिए अमृत रूपी वचन दिए उन समस्त महापुरुषों को आज बड़ी श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। आज उन समस्त महापुरुषों को ईश्वर के समान ही पूजा जाता है। ऐसी ही पूजनीय सावित्रीबाई फुले को भला कौन भुला सकता है जिनके सद्कर्मो का ऋणी समस्त भारतवर्ष है। सावित्रीबाई फुले को एक आदर्श शिक्षिका, आदर्श पत्नी तथा आदर्श समाज सेविका आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। सावित्रीबाई फुले का जन्म इस धरा पर किसी अलौकिक शक्ति के उत्पन्न होने से कुछ कम नहीं था। सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 में महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के सतारा जिले के खंडाला तालुक में बसे एक छोटे से नायगाँव नामक गाँव में हुआ था। सावित्रीबाई फुले के पिता का नाम खण्डोजी पाटिल तथा माता का नाम लक्ष्मीबाई था। सावित्रीबाई फुले बचपन से ही साहसी, प्रतिभाशाली एवं अलौकिक गुणों से संपन्न थीं। चारित्रिक गुणों के विकास के लिए सावित्रीबाई फुले को अनुकूल परिस्थिति, शिक्षा, संस्कार एवं पथ-प्रदर्शक माता-पिता के रूप में उन्हें अपने घर में ही प्राप्त हो गए थे। 9 वर्ष की अल्पायु में ही सावित्रीबाई फुले का विवाह 13 साल के ज्योतिबा फुले के साथ हो गया। एक बार जब फुले जी ने अपने पत्नी को जमीन पर कुछ लिखते हुए व उसे पढ़ने का प्रयास करते हुए देखा तो उनके अंदर सावित्रीबाई फुले को पढ़ाने की ललक जाग उठी। ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी को खेत में पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि उस समय रूढ़िवादी प्रथा के अनुसार स्त्री को घर में पढ़ाना ठीक नहीं माना जाता था। ज्योतिबा फुले जी के मार्गदर्शन में सावित्रीबाई फुले जी ने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। शिक्षित होने के बाद सावित्रीबाई फुले जी मानव जीवन में शिक्षा का कितना महत्व है, यह भली प्रकार से जान गई थीं। उन्होंने यह माना कि शूद्रों, अति-शूद्रों और महिलाओं को शिक्षित करके ही उन्हें उनके अधिकारों से परिचित कराया जा सकता है अतः शूद्रों, अति-शूद्रों, महिलाओं की शिक्षा की जरूरत के संदर्भ में उन्होंने लिखा है कि "मेरे देश बंधुओं में महार, मांग, चमार सभी दुःख और अज्ञान में डूबे हुए हैं। स्त्रियों के स्कूल ने सबसे पहले मेरा ध्यान आकर्षित किया। पूर्ण विचारोपरान्त मेरा यह निश्चित मत हुआ कि लड़कों के स्कूल की बजाय लड़कियों का स्कूल होना बहुत जरूरी है। महिलाएँ दो-तीन साल की आयु में जो संस्कार अपने बच्चों पर डालती हैं उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते हैं।"[2] माँ सावित्रीबाई फुले जी के ही अथक् प्रयासों का परिणाम था कि तत्कालीन समाज में महिलाएँ खड़ी होकर बोलने लगीं, प्रहार करने लगीं, यह सब केवल और केवल माँ सावित्रीबाई की प्रेरणा के कारण सम्भव हुआ है। इसलिए उन्हें स्फूर्ति नायिका, ज्ञानदा और युगस्त्री के रूप में जाना और माना जाता है।[3]

संसार में फैली अमानवीय दशा को देखकर ही माँ सावित्रीबाई फुले जी अपने एक भाषण में कहती हैं कि "जब तक हम इस बात से अवगत नहीं हो पाते की सभी मानव एक ही ईश्वर की ही संताने हैं, तब तक ईश्वर का सही रूप भी समझना नामुमकिन है। हम सब भाई-भाई हैं यह महसूस करना ही ईश्वर की पहचान का प्रथम चिन्ह है और वही सत्य है लेकिन इस बात की, और आँख बंद करके रहना कि हम ही श्रेष्ठ हैं तथा महार-मांगादि को नीच होने से अस्पृश्य समझना मूर्खता है जो लोग ऐसा कार्य करते हैं और उसी धर्माधार से आडंबर करते हैं, वे ईश्वर का सही रूप कभी समझ ही नहीं पाएंगे। ऊँच-नीच ईश्वर कृत नहीं है स्वार्थी मानव ने ही अपनी व्यक्तिगत उन्नति एवं अपने वंशजों के हित के लिए ही यह पाखंडी दर्शन प्रस्तुत किया दूसरे मानव को अस्पृश्य समझना मानवता का लक्ष्य नहीं है इसलिए हर एक व्यक्ति द्वारा अस्पृश्यता को ठुकराने में ही व्यक्ति, समाज एवं संस्कृति का परम कल्याण है।[4]

तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति-

नारी-नर के उत्पत्ति का कारण है। उसकी महानता का वर्णन नहीं किया जा सकता। किंतु तत्कालीन समाज मनुवादी विचारधारा के कारण समाज में विवाहित नारी चौके-चूल्हे से इतर कुछ और सोचने की स्थिति में नहीं रहती। परदा और सामाजिक वर्जनाएँ भारतीय नारी को चौखट से बाहर पैर रखने की इजाजत नहीं देती थीं। उस समय सामाजिक संरचना इतनी जटिल थी कि नारी एक निश्चित जीवन चक्र में जीने को बाध्य थी। जिस प्रकार कोई मशीन निर्धारित प्रणाली से चलती है वैसे ही जीवन नारी का था।[5]

सावित्रीबाई के जीवन में शिक्षा का महत्त्व-

शिक्षा के द्वारा ही लोगों की मानसिकता को बदला जा सकता है यह सावित्री देवी फुले को भली-भाँति पता था। इसलिए स्त्री जाति को ही नहीं वरन् समस्त मानवता को शिक्षा के महत्त्व से परिचित कराती रहती थीं। शिक्षा के महत्व को वह अपनी एक महिला सखी को बताती हुई कहती हैं कि "सखी! पुस्तकों में सब ज्ञान है। जिस जल को हम ज्ञान की देन कहते हैं वह वास्तव में गैसों के सहयोग से बनता है। जिस पृथ्वी को हमें गाय की सींग या शेषनाग के फन पर टिका बताया गया है, वह वास्तव में अंतरिक्ष में सूर्य के चारों ओर घूमती है। यह सब बातें शिक्षा बताती है पुस्तकों में असीमित ज्ञान बिखरा पड़ा है।"[6]

सावित्रीबाई फुले के शिक्षा सम्बंधी क्रान्तिकारी विचार-

क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले शिक्षा के सम्बन्ध में क्रांतिकारी विचार रखती थीं। वह एक स्थान पर कहती हैं कि "हमारे समाज का उद्धार न पूजा-पाठ करने से है, न मंत्रोच्चारण करने से है, न गंगा स्नान करने से है, न गुरु भक्ति से है, न आरती उतारने से है, न तीर्थ यात्रा करने से है, न श्राद्ध आदि करने से है, न जातिगत गर्व करने से है, न ब्रह्म भोज करने से है, न धार्मिक दिखावे से है बल्कि समाज का सच्चा विकास और उद्धार केवल और केवल शिक्षा प्राप्त करने से है।"[7] सन् 1853 में सावित्रीबाई फुले जी ने 'शिक्षा और सामाजिक प्रवेश' विषय पर अपना सिद्धांत पेश किया। जिसमें उन्होंने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया वह कहती हैं कि "छात्र-छात्राएँ जिस समाज और परिस्थिति से आते हैं उसका प्रभाव उनके ज्ञानार्जन पर अवश्य पड़ता है। समाज के निर्माण में बहुत से तत्त्व सहायक संसाधन के रूप में कार्य करते हैं परंतु सबसे मुख्य तत्त्व माता की भूमिका है। सुशिक्षित माताओं द्वारा ही शिक्षा के पाठ बच्चों में कुशलता से हृदयांगम कराया जा सकते हैं।"[8] संसार में समस्त महिलाओं को शिक्षा के लिए जागरूक करती हुई वह सभी से कहती हैं कि "बाल-बच्चों को हम पढ़ायें, हमें भी पढ़ना है, विद्या पाकर ज्ञान बढ़ाएं, नीति धर्म भी हम सीखें।"[9]

सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने सदियों से शिक्षा से वंचित रहे शूद्रादि-अतिशूद्रों के लिए शिक्षा संस्थानों की स्थापना का जो सपना देखा था वह अब उन्हें पूर्ण होता हुआ नजर आने लगा था जब फातिमा शेख और उनके भाई उस्मान शेख ने उन्हें अपने घर में 'स्वदेशी पुस्तकालय' नामक अपना पहला लड़कियों का स्कूल स्थापित करने में उनकी भरपूर मदद की। ज्योतिबा और सावित्रीबाई जी के शिक्षा संबंधी सामाजिक कार्य के महत्व के संदर्भ में 12 जून 1852 को 'पूना आब्जर्वर' ने लिखा था- "अपने देशवासियों के उद्धार के लिए ज्योतिबा द्वारा जो महान प्रयास किया जा रहे हैं और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो प्रशंसनीय कार्य किया है इसके बदले में सरकार से उन्हें 200 रुपये का सम्मान वस्त्र इनाम में मिलने वाला है।"[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कि सावित्रीबाई फुले जी का नारी शिक्षा सम्बन्धी विचार मौलिक एवं आधुनिक है उनके यही विचार उन्हें भारत की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1- श्रीमद्भागवद्गीता, (संवत् 2069) गीताप्रेस, गोरखपुर, 4/47

2- पाखरे, सुषमा, (2022) युगस्त्री सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 12

3- पाखरे सुषमा, (2022) युगस्त्री सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 37

4- एम.जी. माली, (2005) क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 34

5- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 85

6- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 127

7- बौद्ध, शांतिस्वरूप, (2022) क्रान्ति ज्योति सावित्रीबाईफुले की अमर कहानी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 97

8- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 86

9- कुमारी सुशीला, (2025) सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 188

10- आचार्य हेमलता, (2021) भारत की सामाजिक क्रान्ति के पथ-प्रदर्शक, ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 253

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह, "**सावित्रीबाई फुले : प्रथम भारतीय शिक्षिका**" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.287-290, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

[1]प्रतिभा वर्मा और [2]डॉ0 ओम प्रकाश यादव

For publication of research paper title

सावित्रीबाई फुले : प्रथम भारतीय शिक्षिका

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/